75 कविताएँ

अनामिका

चयन एवं सम्पादन

रेखा सेठी

नयी किताब प्रकाशन

नयी किताब प्रकाशन
1/11829, ग्राउंड फ्लोर, पंचशील गार्डन,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
nayeekitab@gmail.com
www.nayeekitab.in

ISBN : 978-93-92998-45-4

मूल्य : ₹ 150

प्रथम संस्करण : 2023

कविताएँ © अनामिका
चयन व भूमिका © रेखा सेठी

मुद्रक : लकी प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

---

75 KAVITAIN : ANAMIKA
Selected and Edited by Rekha Sethi

अनुक्रम

अनामिका को पढ़ते हुए 5

1. नमक 19
2. आम्रपाली 20
3. चौका 23
4. जिनके लिए लिखी जाती हैं कविताएँ 24
5. भामती की बेटियाँ 25
6. बाज़ लोग 28
7. स्त्रियाँ 29
8. चीख 31
9. सृष्टि 32
10. बेजगह 33
11. एक औरत का पहला राजकीय प्रवास 35
12. अयाचित 37
13. मुक्ति 38
14. प्रत्यभिज्ञा 41
15. दलाईलामा 42
16. पाब्लो नेरूदा के नाम 44
17. तुलसी का झोला 45
18. बारिश : दो 49
19. पीठ 50
20. स्नान 51
21. भागे हुए प्रेमी 52
22. अन्तःसत्वा 53
23. फैलना दरअसल सिमट आना है 54
24. इच्छा 55
25. बेरोज़गार 56
26. बन्द रास्तों का सफ़र 58
27. खुसरो की दरगाह 60
28. पत्ता-पत्ता, बूटा-बूटा 61
29. हिन्दी साहित्य का घरेलू इतिहास 63
30. टैगोर को मेरा प्रेमपत्र 68
31. प्रेम इंटरनेट पर 72
32. कूड़ा बीनते बच्चे 74
33. चुटपुटिया बटन 75
34. पतिव्रता 76
35. फर्नीचर 79
36. दरवाज़ा 80
37. मरती नहीं हैं उड़ानें 81
38. दुख की प्रजातियाँ 82
39. घसियारिन थेरी से बोली बूढ़ी घोड़ी 84
40. कमरधनियाँ 84

41. पूर्णमिदम् 86
42. यह दुनिया अब भी 88
43. वार्धक्य में प्रेम की दस्तक 90
44. सम्बन्ध 92
45. सन्धि-पत्र 93
46. पुनश्च 93
47. गलत पते की चिट्ठी 95
48. विस्थापन बस्ती की माँएँ 97
49. शीरो : कमरा संख्या ए 17 100
50. जनाबाई : कमरा संख्या बी 27 101
51. माँ 102
52. मृत्युगंध पर फेनाइल 103
53. बच्चा 105
54. चमक के अलावा 106
55. प्रेम 107
56. गठरियाँ 108
57. गणिका गली 109
58. वृद्धाएँ धरती का नमक हैं 111
59. मौसियाँ 114
60. बीजगणित 115
61. डाक-टिकट 117
62. मरने की फुर्सत 118
63. गृहलक्ष्मी-4 119
64. पगड़ी 120
65. हाशिया 121
66. चुप्पी 122
67. भाषा 122
68. बेचारे पापा और सूक्तियाँ 123
69. खुशदिल कहावतें 126
70. इतिहास : क्रान्ति चौक 126
71. सेल्फी 128
72. अलाव 130
73. हवामहल 131
74. जनम ले रहा है एक नया पुरुष 133
75. नमस्कार, दो हज़ार चौंसठ 135

75

1

नमक

नमक दुख है धरती का और उसका स्वाद भी
पृथ्वी का तीन भाग नमकीन पानी है
और आदमी का दिल नमक का पहाड़
कमज़ोर दिल नमक का,
कितनी जल्दी पसीज जाता है!
गड़ जाता है शर्म से
जब फेंकी जाती हैं थालियाँ
दाल में नमक कम या ज़रा तेज़ होने पर!
वो जो खड़े हैं न—
सरकारी दफ़्तर—
शाही नमकदान हैं।
बड़ी नफ़ासत से छिड़क देते हैं हरदम
हमारे जले पर नमक!
जिनके चेहरे पर नमक है—
पूछिए उन औरतों से—
कितना भारी पड़ता है उनको
उनके चेहरे का नमक!
जिन्हें नमक की कीमत
करनी होती है अदा—
उन नमकहलालों से
रंज रखता है महासागर।

75

दुनिया में होने न दीं उन्होंने क्रान्तियाँ,
रहम खा गए दुश्मनों पर!
गाँधी जी जानते थे नमक की कीमत
और अमरूदों वाली मुनिया भी!
दुनिया में कुछ और रहे-न-रहे–
रहेगा नमक–
ईश्वर के आँसू और आदमी का पसीना–
ये ही वो नमक है जिससे
थिराई रहेगी ये दुनिया।

2

आम्रपाली

था आम्रपाली का घर
मेरी ननिहाल के उत्तर!
आज भी हर पूनो की रात
खाली कटोरा लिये हाथ
गुज़रती है वैशाली के खँडहरों से
बौद्धभिक्षुणी आम्रपाली

अगल-बगल नहीं देखती,
चलती है सीधी-मानो ख़ुद से बातें करती–
शरदकाल में जैसे
(कमण्डल-वमण्डल बनाने की ख़ातिर)
पकने को छोड़ दी जाती है
लतर में ही लौकी–
पक रही है मेरी हर मांसपेशी,
खदर-बदर है मेरे भीतर का

75

हहाता हुआ सत!

सूखती-टटाती हुई
हड्डियाँ मेरी
मरे कबूतर जैसी
इधर-उधर फेंकी हुई मुझमें।
सोचती हूँ—क्या वो मैं ही थी—
नगरवधू—बज्जिसंघ के बाहर के लोग भी जिसकी
एक झलक को तरसते थे?
ये मेरे सन-से सफ़ेद बाल
थे कभी भौंरे के रंग के, कहते हैं लोग,
नीलमणि थीं मेरी आँखें
बेले के फूलों-सी झक सफ़ेद दन्तपंक्ति :
खँडकर का अर्द्धध्वस्त दरवाज़ा हैं अब जो!
जीवन मेरा बदला, बुद्ध मिले,
बुद्ध को घर न्योतकर
अपने रथ से जब लौट रही थी
कुछ तरुण लिच्छवी कुमारों के रथ से
टकरा गया मेरे रथ का
धुर से धुर, चक्के से चक्का, जुए से जुआ!
लिच्छवी कुमारों को ये अच्छा कैसे लगता,
बोले वे चीख़कर—
"जे आम्रपाली, क्यों तरुण लिच्छवी कुमारों के धुर से
धुर अपना टकराती है?"
"आर्यपुत्रो, क्योंकि भिक्खुसंघ के साथ
भगवान बुद्ध ने भात के लिए मेरा निमन्त्रण किया है स्वीकार!"
"जे आम्रपाली!
सौ हज़ार ले और इस भात का निमन्त्रण हमें दे!"
"आर्यपुत्रो, यदि तुम पूरा वैशाली गणराज्य भी दोगे,
मैं यह महान भात तुम्हें नहीं देनेवाली!"